प्रधान संपादक की कलम से...

ऐसा चाहूं राज मैं

दयाराम
प्रधान संपादक
मो. 9368125292

महापुरुषों की जयंती मनाने का एक सुनिश्चित मकसद होना चाहिए, इसलिए कि कोई भी महापुरुष अपने सुनिश्चित मकसद के लिए ही अपना समाज जीवन जीता है और लोगों के लिए आदर्श बन जाता है। इस वर्ष 2026 में पूरा देश 1 फरवरी को संत रैदास की और 2 फरवरी को बिहार लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद की जयंती मना रहा है। दोनों महापुरुषों ने अपने समाज जीवन में सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन का जोखिम भरा लक्ष्य चुना।

परिवर्तन विरोधी ताकतों ने दोनों महापुरुषों की जीवन-लीला समाप्त कर दी। संत रैदास के यशकायी होने के बाद आर्यपुत्रों ने उनके विचारों का ब्राह्मणीकरण करने का प्रयास किया जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। सबसे पहले आर्यब्राह्मणों ने विज्ञापन के तौर पर हनुमान का सीना चीर कर राम-लक्ष्मण का दर्शन कराकर हनुमान को चमत्कारिक पुरुष घोषित कर दिया। फलतः हनुमान पूज्यनीय हो गए। हनुमान के मंदिरों में पूजा अर्चना प्रारम्भ हो गई। हनुमान भक्तों की गाढ़ी कमाई से ब्राह्मणों की जेब भरने लगी। दूसरी तरफ संत रैदास के भक्त भी रैदास जयंती के अवसर पर संत रैदास का सीना चीर कर सात जन्मों का जनेऊ दिखा कर आर्य ब्राह्मणों को चुनौती दी, इस धारणा के साथ कि उनके महापुरुष हनुमान से कहीं अधिक महान थे, जिन्होंने अपना सीना चीर कर सात जन्मों का जनेऊ दिखा दिया। यह दुखद स्थिति हैं कि संत रैदास के मंदिरों में भी आज वही भजन कीर्तन, पूजा अर्चना प्रारम्भ हो गई, जो आज भी जारी है। भारत की संविधान सभा ने जीवन के पूर्व निर्धारित ब्राह्मणवादी मूल्यों को नकारते हुए संविधान की प्रस्तावना में संकल्प लिया कि वे भारत के समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और

'जात जात में जात है, ज्यों केलन में पात।
रैदास न मानुष जुड़ सके, जब लो जात न जात।'

राजनैतिक न्याय प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। संविधान लागू होने से कई सौ साल पहले सामाजिक समानता और सामाजिक व आर्थिक न्याय की नसीहत दी। उन्होंने कहा-

'जात जात में जात है,
ज्यों केलन में पात।
रैदास न मानुष जुड़ सके,
जब लो जात न जात।'

संत रैदास ने जाति को झेला था। जाति को जिया था। बाबा साहब डॉ. आंबेडकर संत रैदास की शिक्षाओं से प्रभावित होकर जातिप्रथा के समूल विनाश के लिए 'अछूत कौन?' और 'जाति भेद का उच्छेद' पुस्तक लिखा, जिसको आर्यों के वंशजों ने जप्त कर लिया था, जिसे ललई सिंह यादव ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर कर उसे बहाल कराया। वर्ण और जाति व्यवस्था ही आर्यब्राह्मणों का सनातन धर्म एवं सनातन संस्कृति है। वे अपनी संस्कृति का विनाश कैसे चाहेंगे जिस धर्म एवं संस्कृति ने उन्हें एकाधिकार प्रदान किया।

जाति को अंग्रेजी में कास्ट कहते हैं। कास्ट ने मूलनिवासियों को सबसे अधिक कष्ट दिया। हमारी संविधान सभा ने भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया किंतु जहां कास्ट है वहां कोई भी देश राष्ट्र नहीं बन सकता। संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र बनाना तो बहुत दूर की बात है। सबसे हैरतअंगेज बात यह है जातीय भेदभाव के शिकार अछूत और सछूत शूद्र जो बड़े से बड़े संवैधानिक पदों पर रहते हुए भी जातिय भेदभाव के आए दिन शिकार होते रहते हैं, वे भी जयंती समारोहों में भाग लेते हैं। संत रैदास की मूर्ति पर माल्यार्पण करते हैं किंतु अपने ऊपर हो रहे जातीय जुर्म पर 'ऊफ' तक नहीं करते। जाति प्रथा ने कितनों का घर-संसार उजाड़ दिया। जाति प्रथा ने कितनों का सिर मुड़ा, कितनों की चुटिया काटी; फिर भी जाति प्रथा के विनाश के लिए कोई आंदोलन नहीं बल्कि केवल संत रैदास की जय-जयकार वह भी बैंड-बाजे के साथ जूलूस और नाच-गाने ही दिखाई देते हैं।

संत रैदास ने आर्थिक समानता की नसीहत दी और कहा-

'ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़ों सब सम बसैं,
रैदास रहे प्रसन्न।

रैदास ने सत्य का मार्ग चुना, क्योंकि आर्यों के सांस्कृतिक मूल्य असत्य की बुनियाद पर खड़े थे, यद्यपि मनु ने मनुस्मृति के अध्याय-4/238 में सत्य की नसीहत देकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास है कि मनुस्मृति से नैतिकता का प्रादुर्भाव हुआ है। 'सत्य बोलो प्रिय बोलो, असत्य व अप्रिय न बोलो'; किंतु वहीं मनु; मनुस्मृति के अध्याय 8/104 में लिखा है, 'सत्य बोलने से यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का हनन होता है तो असत्य बोलना सत्य से उत्तम है।'

संत रैदास सत्य मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं और उनका मानना है कि सत्य मार्ग का अनुशरण करने पर ही सुख की प्राप्ति होती है। वे कहते हैं-

'रैदास सत्य का आसरा,
सत्य सदा सुख पाये।
सत्य कबहुं नहिं छांड़िये,
जग जाये सो जाये।'

सत्य ही सनातन है। सत्य हमेशा एक जैसा रहता है। सत्य सार्वभौम है। संत रैदास के सत्य के संदेश के अनुशरण से अंधविश्वास पाखंड चमत्कार पुनर्जन्म वर्ण और जाति व्यवस्था जैसी शास्त्र सम्मत धार्मिक धारणाओं का विनाश संभव है। यही संत रैदास के जन्म दिन मनाने के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बिहार के लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद का जन्म 2 फरवरी 1922 में अरवल

'रैदास सत्य का आसरा, सत्य सदा सुख पाये।
सत्य कबहुं नहिं छांड़िये, जग जाये सो जाये।'

'ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़ों सब सम बसैं, रैदास रहे प्रसन्न।

जिले के कुरहारी गांव में हुआ था। सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले बाबू जगदेव प्रसाद को आर्यपुत्रों ने 5 सितंबर 1974 को कुर्था ब्लॉक पर मूलनिवासियों का मार्गदर्शन करते समय गोलियों से भून दिया। वे वहीं शहीद हो गए थे। उनके जन्म दिन 2 फरवरी को कुर्था ब्लाक पर प्रतिवर्ष मेला लगता है जिसमें अपार भीड़ होती है और वहां अमर शहीद बाबू जगदेव प्रसाद अमर रहे! के गगन भेदी नारों से पूरा आकाश गूंज उठता है। बाबू जगदेव प्रसाद के सीने में कोई चमत्कारी अलौकिक शक्ति नहीं बल्कि बेबस, लाचार और बेसहारा, मजलूमों और महरूमों का दर्द था। विहार राज्य के सामंतों, साहूकारों, जमींदारों का कहर चरम सीमा पर था। वहां के ऊंची जाति के सामंत और जमींदार मूल निवासियों को गाजर-मूली की तरह काट रहे थे। अछूत और सछूत शूद्रों से वे काम तो लेते थे किंतु उन्हें मजदूरी नहीं। स्वतंत्र भारत में संविधान से अछूतों और पिछड़ों के अंदर सम्मान प्राप्त करने जिज्ञासा ज्यों बलवती होना शुरू हुई, ऊंची जातियों को बर्दाश्त नहीं। ऐसे समय में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए जगदीश महतो, रामेश्वर अहीर और गोला चमार ने अपने हाथों में बंदूक उठा लिया। अंत में उन्हें आर्यपुत्रों ने गोलियों से भून दिया। गोला चमार को आर्यपुत्रों ने बुरी तरह से मारा और उनकी औरतों ने गोला चमार की पत्नी को पत्र लिखा कि यदि गोला मर जाए तो वे उसके कफन के लिए अपना पेटीकोट भेज देंगी। बाबू जगदेव प्रसाद ने इन सारी घटनाओं को देखा और उनका आकलन कर राजनीतिक आंदोलन में कूद पड़े। पहले संसोपा के साथ राजनीति में सहभाग किया किंतु वहां उन्होंने देखा कि डा. राममनोहर लोहिया ऊपर से समाजवादी और अंदर से गांधीवादी और घोर ब्राह्मणवादी हैं। उन्होंने संसोपा से त्यागपत्र देकर शोषित दल बनाया और शोषित दल की सरकार भी बनाई और वे मंत्री भी रहे। तत्पश्चात वे महामना रामस्वरूप वर्मा के मिलकर वर्मा जी के समाज दल और अपने शोषित दल का विलय कर 7 अगस्त 1972 को शोषित समाज दल की स्थापना की और दोस्त दुश्मन की पहचान के लिए नारा दिया, 'दस का शासन नब्बे पर नहीं चलेगा।', 'सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।', 'शोषितों का राज शोषितों के द्वारा और शोषितों के लिए होगा।', 'शोषितों ने ललकारा है धन-धरती और राजपाट में नब्बे भाग हमारा है।'

बाबू जगदेव प्रसाद ने मूलनिवासियों को राजनीतिक सत्ता प्रदान करने के लिए उनका आह्वान किया और कहा, 'मेरे बाप दादों से ऊंची जाति वालों ने हलवाही करवाई है परंतु मैं उनकी राजनीतिक हलवाही करने के लिए तैयार नहीं हूं और न हीं अपने लोगों से उनकी हलवाही करने के लिए कहूंगा। मैं एक सुनिश्चित नीति के तहत इन्हीं काले-कलूटे लोगों को तैयार करूंगा और दिल्ली की गद्दी पर उन्हें बैठाऊंगा जो धन-धरती और राज पाठ का फैसला खुद करेंगे। जिस प्रकार कोई कुत्ता मांस की रखवाली नहीं कर सकता उसी प्रकार ये ऊंची जाति के सामंत साहूकार और जमींदार कभी भी शोषितों का हक देने वाले नहीं हैं, इसलिए शोषितों का राज शोषितों द्वारा और शोषितों के लिए होगा।

बाबू जगदेव प्रसाद ने भीष्म प्रतिज्ञा की कि वे राजनीतिक सत्ता को प्राप्त कर जिस प्रकार हमारी बहन बेटियां धूप व बरसात में सवर्ण जातियों के खेतों में काम करती हैं और वे उन्हें उचित मजदूरी नहीं देते, वे उन ऊंची जाति की महिलाओं को महलों से उतार कर खेतों में उनसे धान की रोपनी करवायेंगे। उन्होंने नारा दिया- 'अब की सावन भांदो में गोरी कलैया कादो में।' अर्थ–इस बार सावन भादों के महीने में गोरी गोरी कलाई वाली सवर्ण महिलाओं से कीचड़ में धान की रोपनी करवायेंगे।

बाबू जगदेव प्रसाद की वाणी उन्हें तीर जैसी लगी और उन्होंने सत्ता से सांठगांठ कर 5 सितंबर 1974 को जब वे मूलनिवासियों को संबोधित कर रहे थे, तभी उन पर गोलियां चलाकर उनकी जीवन लीला ही समाप्त कर दी। बाबू जगदेव प्रसाद को बचाने के लिए 12 वर्षीय बच्चा लक्ष्मण चौधरी भी मारा गया था, जिस लक्ष्मण चौधरी के घर बाबू जगदेव प्रसाद कभी-कभार रुकते थे। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे लिए प्रेरणा श्रोत है। सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के आंदोलन में शहीद हुए क्रांति युगपुरुष संत रैदास और बहुजन लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद को भावभीनी श्रद्धांजलि! उन्हें शत् शत् नमन!❑